

શ્રીમદ્ દેવનન્દી અપરનામ પૂજ્યપાદસ્વામી વિરચિત

સમાધિતંત્ર પ્રવચન

(ભાગ-૨)

(અધ્યાત્મયુગપુરુષ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજીસ્વામીના
શ્રી સમાધિતંત્ર ઉપરના સળંગ પ્રવચનો)

માગશર સુદ ૧૨, ગુસ્વાર તા. ૨૬-૧૨-૧૯૭૪
શ્લોક - ૭, ૮-૯ પ્રવચન - ૧૬

પાનું ૧૯ છે. ત્રિકાળીની વાત બાકી છે ને થોડી? અહીંયાં સમાધિતંત્ર છે આ અધિકાર. આત્માનો ધર્મ કેમ થાય અને સમાધિ એટલે શાંતિ કેમ મળે? તો કહે છે કે એ આત્મા પોતાની જાત છે. પરમાત્મસ્વરૂપે ચિદાનંદ આત્મા છે. એના સ્વરૂપ શુદ્ધ ચૈતન્યની સન્મુખ થઈને જે આત્માની શ્રદ્ધા-જ્ઞાન અને શાંતિ અંતર એકાગ્રતાથી પ્રગટે એને સમાધિ કહીએ, એને ધર્મ કહીએ, એને મોક્ષનો માર્ગ કહીએ. સમજાણું કાંઈ? લોગસ્સમાં નથી આવતું આપણે? ‘સમાહિવરમુત્તમં દિંતુ’ સામાયિકના પાઠમાં આવે છે. વાંચ્યું છે? પંડિતજી!

મુમુક્ષુ :- દુઃખખલો, કમ્મખલો.

ઉત્તર :- ઈ નહિ. ‘સમાહિવરમુત્તમં દિંતુ’ સામાયિકમાં આવે છે. સામાયિક થતી હોયને ત્યાં? તમારે તો આવે છે પહેલેથી. ગડિયા હાંક્યા. આહાહા..! ‘સમાહિવરમુત્તમં દિંતુ’. હે પરમાત્મા! એ તો પોતે દેખે નહિ પણ આ તો પોતાની જે ભાવના છેને એટલે કહે છે, ‘સમાહિ...’ આત્માને પુણ્યના-પાપના જે ભાવ થાય છે એ દુઃખ હૈ, અશાંતિ હૈ.

અહીં કહે છે કે ‘જીવ ત્રિકાલ જ્ઞાનસ્વરૂપ હૈ.’ આત્મા તો પ્રજ્ઞાબ્રહ્મ ચિદાનંદ સ્વરૂપ ત્રિકાલી હૈ. ઉસકી અંતર દષ્ટિ કરકે આત્મામેં શાંતિકા અંશ પ્રગટ કરના ઉસકા નામ ધર્મ ઔર સમાધિ ઔર મોક્ષમાર્ગ હૈ. આહાહા..! કોઈ વ્રતકા વિકલ્પ, તપકા વિકલ્પ કરતા હૈ કિ મેં એસે ઉપવાસ કરું. વહ સબ તો રાગ હૈ. વહ કોઈ ધાર્મિક ક્રિયા નહીં. વજુભાઈ! ત્રિકાલી જ્ઞાનસ્વરૂપ હૈ. આહાહા..! નિત્યાનંદ પ્રભુ ધ્રુવ સ્વરૂપ, ઉસકો પકડકરકે એકાગ્ર હોના,

अेकाग्र हो उसका नाम धर्म है. आलाला..! अज्ञानी अपनी चीज कैसी है उसको मानते नहीं. थोडा हिन्दी आ गया.

भगवान आत्मा ज्ञानका पिंड प्रभु है. ज्ञानस्वरूप. जिसमें शरीर नहीं, कर्म नहीं, वाणी नहीं और जिसमें पुण्य और पाप, दया, दान, व्रत, भक्तिका विकल्प उठता है वह राग है, वह भी उसमें नहीं है. आलाला..! ऐसी चीजको अंतरमें पकडकर के.. आलाला..! वह आत्मज्ञान. अंतरमें लीन होना उसका नाम धर्म है, वह मोक्षका मार्ग है. बाकी सब क्रियाकांड करो, लाभ छोड व्रत, तप, भक्ति, पूजा, दान और दया सब रागकी क्रिया है. लक्ष्मीचंद्रञ्च! आलाला..! वह तो संसार दे. रागकी क्रिया संसार परिव्रमणका कारण है. आलाला..! समजमें आया?

कहते हैं कि 'शुव, त्रिकाव ज्ञानस्वरूप है. उसको बहिरात्मा...' अंतर स्वरूप ऐसा है ज्ञानानंद स्वभाव, उस ओरकी नजरके अभावमें... वह चीज आत्मा परमात्मस्वरूप अंतर है. आलाला..! उस तरक्की नजर, दृष्टि छोडकर बहिरात्मा अज्ञानवश अपने स्वरूप को ज्ञानता नहीं. आलाला..! दूसरेको ज्ञाननेमें प्रविण. ईन्द्रियों द्वारा दूसरे पदार्थोंको ज्ञाननेसे दूसरे पदार्थका ज्ञान होता है. वह भी अपनी पर्यायमें अपने कारणसे होता है. लेकिन उसमें-परमें ज्ञानको रोकने से अपना आत्मज्ञान से वंचित होता है. अपना ज्ञान करने में वह पराड्मुभ हो जाता है. आलाला..! समज में आया? कैसे?

'अज्ञानवश नहीं ज्ञानता...' क्या? भगवान त्रिकावी त्रिकाव स्वरूप ज्ञान, नित्यानंद प्रभु, वह बहिरात्मा बाह्यको ही अपना माननेवाला अपनेमें अज्ञानवश उसको (अपनेको) ज्ञानता नहीं. आलाला..! 'और बाह्य ईन्द्रियगोचर पदार्थ,...' जो ईन्द्रियगम्य बाह्य पदार्थ है. आलाला..! 'जो मात्र ज्ञेयरूप हैं...' ज्ञानमें ज्ञेय है. दूसरी चीज है. चाहे तो सर्वज्ञ परमात्मा हो या चाहे तो देव-गुरु हो या चाहे तो शास्त्र हो, चाहे तो मंदिर और प्रतिमा हो. सभी.. आलाला..! बाह्य ईन्द्रियगम्य पदार्थ मात्र ज्ञेयरूप ज्ञानने लायक है.

'उनमें ईष्ट-अनिष्टकी कल्पना करके...' अनुकूल पदार्थ देखकर.. दूसरी चीज है उसमें कोई अनुकूलता-प्रतिकूलता की छाप नहीं (है), ट्रेडमार्क नहीं है कि यह अनुकूल है और यह प्रतिकूल है. वह तो ज्ञेय नाम अपने ज्ञानमें ज्ञानने लायक चीज है. ऐसी चीजमें दो भाग पाड देते हैं अज्ञानी. है? 'ईष्ट-अनिष्टकी कल्पना करके...' शरीर सुंदर हो तो ठीक, स्त्री सुंदर-गोरी मिले तो ठीक. ऐसा अज्ञानी मिथ्यादृष्टि ज्ञानने लायक परज्ञेय पदार्थमें दो भाग कर देता है. आलाला..! समज में आया?

अेक ओर भगवान त्रिकावी ज्ञान लिया न? त्रिकावी ज्ञानस्वरूप ही है. और परवस्तु

अपने सिवाय शरीर, वाणी, मन, स्त्री, कुटुंब, परिवार, देव-गुरु-शास्त्र.. आलाला..! वे तो ज्ञानमें ज्ञानने लायक ज्ञेय पदार्थ हैं. जनाने लायक वह पदार्थ है. वह पदार्थ ईष्ट-अनिष्ट है नहीं. पोपटभाई! ये लडके लुशियार लुअे तो बहुत अरुण लुआ, कमाये. कर्मी जगो. ऐसा नहीं कलते? हमारे बेटे कर्मी हैं. कर्मी अर्थात् कर्म करनार-पाप.

मुमुक्षु :- ...

उत्तर :- धूल में भी पैसा कमाता नहीं. आलाला..!

यहां तो कलते हैं, भगवान आत्मा चैतन्य प्रज्ञाब्रह्म स्वरूप, आनंदस्वरूप और ज्ञानस्वरूप है. आलाला..! उसके सिवा... अरे..! अंदरमें राग लो, पुण्यका भाव लो, दयाका भाव लो या पर चीज शरीर या कुटुंब आदि लो या देव-गुरु-शास्त्र लो, मंदिर और प्रतिमा लो.. आलाला..! वह ज्ञानमें ज्ञेय ज्ञानने लायक है. ऐसा न मानकर अज्ञानी ईष्ट-अनिष्टकी कल्पना करते हैं. यह ईष्ट है. हमारे करीबी लोग है. पोपटभाई! करीबी लोग है. जानगी बात करनी लो तो हम उसके साथ कर सकते हैं. ... समज में आया? वस्तु पर है वह अपने ज्ञानमें ज्ञानने लायक है. अस! इससे अतिरिक्त वह ऐसा मानता है कि यह चीज मुझे ईष्ट लगती है, यह चीज मुझे अनिष्ट लगती है. अस! वह मिथ्यात्वभाव है. भ्रमभाव है, जूठा भाव है, पापभाव है. चोर्यासी लाभकी योनीमें, गंदगीमें उत्पन्न करनेका स्थान है वह. आलाला..! समजमें आया?

‘अनिष्टकी कल्पना करके, अपनेको सुभी-दुःभी,...’ जैसे पांच-पचास लाभ, करोड, दो करोड, पांच करोड, दस करोड और अरब हमें मिले, हम सुभी हैं. मूढ मानता है. पापी, आत्माके स्वभावको छोडकर परमें सुभ है और परसे सुभ है, ऐसी मान्यतामें आत्माकी शांतिका हास-नाश होता है. समजमें आया? कलते हैं अपनेको सुभी. हम सुभी हैं. बालबच्चा और लक्ष्मी, व्यापार-धंधा और हमारा मुनिम भी बडा कामका मिला है कि वह हमारा काम बडा अरुण कर लेता है. हम सुभी है. तो कलते हैं कि मिथ्यादृष्टि ऐसा मानते हैं. जूठी दृष्टि उसकी है. सुभ तो अपने आत्मामें है. आनंदस्वरूप है, सच्चिदानंद स्वरूप है. उसके सुभका तो अनादर करते हैं. और परमें सुभ है, परसे (सुभ है), वही मिथ्यात्वकी दशा आत्माकी शांतिकी हिंसा करनेवाली है.

और अनिष्ट-दुःभी. मैं निर्धन हूं, मैं बांज हूं, कुंवारा हूं, कोई साधन नहीं, रोटीका साधन नहीं, स्थानका साधन नहीं-रहनेका (साधन) नहीं, मैं दुःभी हूं, वह भी मूढ जव है. समज में आया? सुभ तो आत्मा आनंदमूर्ति है. परमें सुभ-दुःभ मानते हैं ऐसी कल्पना वही दुःभ है. परवस्तु दुःभका कारण है नहीं. आलाला..! समज में आया?

‘सुष्मी-दुःष्मी, धनवान-निर्धन,...’ लो, ये धनवान आया. मैं धनवान हूँ, मैं पैसेवाला हूँ, मैं गर्भश्रीमंत हूँ, मैं तो माताके पेटमें आया तबसे श्रीमंत हमारे पिताजी थे. श्रीमंतके घर हमारा जन्म हुआ. हम धनवान हैं. मूर्ख है, कलते हैं. समझ में आया? आलाला..! धन तो अपने अंदरमें आनंद और ज्ञानलक्ष्मी से भरा पडा आत्मा है. उसका अपना स्वीकार करके धनवान होना वह अपना धन (है). वह धनवान छोडकर लक्ष्मीमें मैं धनवान हूँ, मैं निर्धन हूँ... आलाला..! वह अज्ञानीकी कल्पना मिथ्यात्वभाव है. समझमें आया?

मैं बलवान हूँ. मेरा शरीर बलवान बडा है. वह नहीं था? कौन? गामा. गामाका सुना था, बलुत ज़ोर (था). अक मोटरको जैसे रभे, अक मोटरको जैसे रभे. दोनों मोटरको षडी रभ दे. वह भरते वक्त...क्या नाम बताया? गामा? अजबारमें आया था. पीछे डोक्टर पहचानवाला बैठा है. मकजी आयी, मकजी. अजबारमें आया था. कहां गया तेरा बल? सुन न! बल तो जडकी चीज है. मैं बलवान हूँ कहांसे आया? समझमें आया? वह भ्रम है. मैं आत्मा ज्ञान हूँ, आनंद हूँ ऐसा छोडकर मैं शरीरसे बलवान हूँ ऐसी मान्यता भ्रम असत्य है, जूठी श्रद्धा है और जूठी श्रद्धाका इव संसारमें इवना, दुःख है. आलाला..! समझमें आया?

और मैं ‘निर्बल,...’ हूँ. निर्बल तू कहां है? वह तो शरीर कमजोर हो जाय. शरीरमें कमजोरी हो जाय वह तो जडकी दशा है. भगवान आत्मा निर्बल कहां है? आलाला..! शरीरकी शक्ति कम होनेसे मैं निर्बल हूँ ऐसी मान्यता जूठी, पाजंड दृष्टिवंतकी है. आलाला..! समझमें आया? और मैं ‘सुइप-...’ हूँ. सुंदर... सुंदर.. स्वइप मेरा है. ये तो मिट्टी-धूल है. धूलका इप है वह तो जडका है. तेरा है? आलाला..! क्षणमें इपमें.. ये क्या कलते हैं तुम्हारे? लार्ट-लार्ट (अटेक). जाओ! ये अभी चल बसे न. शांतिवाल भुशाल, गोवावाले. .. उसके पास दो अबज चावीस करोड इपये. दो अबज चावीस करोड. दशाश्रीमाणी बनिया था. अये..! उसके बलनकी लडकी यहां है न, बालभ्रमचारी है. दुःखता है. रातको डेढ बजे उठा. उसकी बलुको कुछ हुआ था. क्या कलते हैं? हेमरेज कलते हैं न? असाध्य हो गई थी. तो मुंबई ठंवाजके लिये लाये. उसमें भुदको ... रातको डेढ बजे... बुलाओ डोक्टरको. वह नहीं थे मुंबई, भाई! मुंबई. उसके समधी हैं. कांतिवाल? कांतिभाई. कांतिभाई है न? यहां देरासरके पास मकान है. उसने कहां, मैं भडा था. इतना बोले, डोक्टरको बुलाओ. मैं डोक्टरको बुलाने जाता हूँ, वापस आया तो मर गये. दस मिनिट. धूल भी तेरी चीज नहीं है. शरीर तेरा नहीं है तो लक्ष्मी कहांसे आयी?

मैं ‘सुइप-’ हूँ. यह तो जडकी लोवी है. जडकी दशा है यह तो मिट्टीकी. मैं सुइप

हूं, मैं 'कुड़प,...' हूं. आलाहा..! ऐसी मान्यता अज्ञानी, परचीज ज्ञानने लायक अेक प्रकारकी है उसमें दो भाग पाड देते हैं. सूक्ष्म बात है, भगवान! यह तो सूक्ष्म बात धर्मकी-वीतरागकी है. सर्वज्ञ परमेश्वर त्रिलोकनाथ तीर्थकर देवका इरमान है यह. तो तुम कैसे भूले? जो चीज तू ज्ञायक ज्ञाननेवाला है, वह चीज तो ज्ञानने लायक उतनी चीज है. उसके अतिरिक्त तुम ऐसा मान लेते हो कि मैं सुड़प हूं. वह तो जड है. वह तो ज्ञानमें ज्ञानने लायक चीज है. ऐसा न जानकर, यह सुड़प ही मैं हूं, कुड़प ही मैं हूं. आलाहा..! राजा में हूं. बडा पांच-पचीस करोडकी कमाई है मलिनकी. राजा हूं बडा. हाथी ... घूल में भी नहीं है राजा. राजा कहांसे आया? तुम तो आत्मा हो. ऐसा छोडकर अपनेको राजा मानता है, वह मूढ है. मिथ्या नाम बूढी-असत्य दृष्टि सेवनेवाला है. और बूढका सेवन करनेका इव बूढ होता है.

'रंक,...' हूं. मैं तो गरीब हूं, लैया! गरीब तुम कहां हो? तेरा आत्मा तो भिन्न चीज है. मैं गरीब हूं, मेरे घर कोई स्त्री नहीं. हाथसे रोटी करके खाता हूं. मैं गरीब हूं. वह उसकी असत्य मान्यता मूढकी है. 'ईत्यादि होना मानता है.'

‘विशेष’

‘मिथ्या अभिप्रायवश अज्ञानी मानता है कि,...’ बूढे अभिप्राय श्रद्धाके वश ऐसा मानते हैं. समज में आया? ‘मिथ्या अभिप्रायवश...’ अभिप्राय नाम श्रद्धा. ‘अज्ञानी मानता है कि, शरीर उत्पन्न होनेसे मेरा जन्म हुआ,...’ शरीर उत्पन्न हुआ तो (कहे), आज मेरी जन्मजयंति है. ५० वर्ष, ६० वर्ष पर करते हैं न? जन्मजयंति. आज मेरी जन्मजयंति है. तेरी जन्मजयंति है? शरीर उत्पन्न हुआ उसमें तू आया? वह तो शरीरका जन्म है. समजमें आया? आलाहा..!

‘शरीर उत्पन्न होनेसे मेरा जन्म हुआ; शरीरका नाश होनेसे मैं मर जाऊंगा;...’ मरे कौन? भगवान तो त्रिकाल अविनाशी आत्मा है. उसका जन्म कहां और मरण कहां? समज में आया? मैं मर गया, मैं मर जाता हूं, मैं अब यवा जाता हूं, मर जाता हूं. आलाहा..! मूढ मानते हैं, कलते हैं. ‘मैं मर जाऊंगा,...’ देजो! शरीरका नाश होनेसे मैं मर जाऊंगा. मैं मर गया शरीरका नाश होनेसे. कौन मरे? बापू! आलाहा..!

‘शरीरकी उषु अवस्था होने पर, मुझे बुभार आया,...’ बुभार तो शरीरको आता है. बुभार उषु होता है, आत्मा उषु है? आलाहा..! पांच डिग्री बुभार आया, मेरा दिमाग धूम गया. अये..! डोक्टर के विये ईधरईधर दौडता है. डोक्टर-डोक्टर. पांच डिग्री चढ गया, अभी छह-सात हो जायेगा. जल्दी करो... जल्दी करो... दवा लाओ.. दवा लाओ.

.. शरीर तो जड है. उसको बुझार तो जडमें आया है. तेरे अस्तित्वमें है? तेरे अस्तित्वमें आया है? जडके अस्तित्वमें आया है. आलाला..! जबर नहीं, कुछ जबर नहीं. अंधे अंध यवा. अंधा टिभाये और अंधा यवे. आलाला..! धर्मकी तो जबर नहीं लेकिन सत्य चीज क्या है और कैसे मैं परको मानता हूं और कैसे मैं अपनेको नहीं मानता हूं. अपनेको नहीं मानता हूं, मालूम नहीं कुछ. कहते हैं कि, शरीरकी उष्ण अवस्था लुई, मुझे बुझार आया.

‘शरीरकी लूज,...’ मुझे लूज लगी है. लूज तो जडकी अवस्था है. तुम तो अड़पी आत्मा त्रिन्न हो. समज में आया? ‘ध्यास,...’ मुझे ध्यास लगी है. आलाला..! मेरा गला सूज रहा है. मोसंजी लाओ, आर्स्ट्रीम लाओ, इलाना लाओ. आलाला..! प्रभु! तू कौन है तुझे मालूम नहीं, भाई! तुम चैतन्यस्वरूप हो, चैतन्य चमत्कार हीरा है. आलाला..! अंदर तेरी चीज चैतन्य चमत्कारसे हीरा बरा पडा है. ऐसा तुम अपनेको मानते नहीं और यहां ऐसा मानता है कि मुझे रोग आ गया, मैं दुःखी हुआ, ध्यास लगी. आलाला..!

‘आदिष्ट अवस्था होने पर, मुझे लूज-ध्यास लगी; शरीरके कटनेसे मैं कट गया,...’ रेलमें कट जाता है कि नहीं? रेलमें. यहां मुंभईमें बहुत होता है. मुंभईमें दररोज अक-दो-तीन-चार मरते हैं बस में. हम तो यहांसे नीकले तो देजा, आदमी मर गया. पुवीस ईकट्टी लुई. सुबहसे निकला हुआ शामको घर आये तो ठीक, वरना जवास हो जाता है. मेरा शरीर कट गया. मेरा नाक कट गया, मेरा हाथ टूट गया, मेरा .. तूट गया. वह सब जडका है. मिट्टी-धूल है. तो यह अवयव मेरा कट गया और मैं कट गया ऐसा मानना ईत्यादि. ‘ईस प्रकार वह अजवकी अवस्थाको,...’ वह तो जडकी अवस्था है. वह ‘अपनी (आत्माकी) अवस्था मानता है.’ आलाला..!

अब यह मोक्षमार्ग की बात है थोड़ी. मोक्षमार्ग प्रकाशक है न? ‘अपनेको आपड़प जानकर,...’ अपना आनंदस्वरूप ज्ञान उसको अपना स्वरूप जानकर ‘परका अंश भी अपनेमें नहीं मिलाना...’ राग, शरीरादिका अंश भी आत्मामें मिलान करना नहीं. आलाला..! ‘और अपना अंश भी परमें नहीं मिलाना...’ ज्ञानकी पर्याय जडसे लुई है ऐसे मिलाना नहीं. समज में आया? ‘ऐसा सख्या श्रद्धान नहीं करता.’ सखी श्रद्धा सत्यका सत्यरूपसे और असत्यकी असत्यरूप श्रद्धा करता नहीं और भ्रमसे अनादिसे परिभ्रमण करता है.

‘जैसे, अन्य मिथ्यादृष्टि निर्धारि बिना...’ बूठी दृष्टिवंत निर्णयके बिना ‘पर्यायबुद्धिसे जानपनेमें...’ मोक्षमार्ग प्रकाशक. जानपनारूप है न क्षयोपशम ज्ञानकी पर्याय-विकास. उस जानपनेमें ‘व वषादृष्टिमें...’ ईस शरीरके वषादृष्टिमें ‘अहंबुद्धि धारण करते हैं,...’ जाननेकी दशा आदि मैं और शरीरकी रंग, गंधकी अवस्था भी मैं. ऐसे मूढ जव, भ्रमणा करनेवाला

अज्ञानी ऐसा मानते हैं.

‘उसी प्रकार यह भी आत्माश्रित ज्ञानादिमें..’ ज्ञाननेकी पर्याय उसमें और ‘और शरीराश्रित उपदेश-उपवासादि क्रियाओंमें...’ शरीराश्रित यह उपदेश होता है वह तो ... जड़की है. आलाला..! और उपवास. उपवास करनेसे शरीर .. तो मेरा शरीर कम हो गया. वह सब अवस्था तो जड़की है. ‘शरीराश्रित उपदेश-’ में उपदेश करता हूं, उपदेशकी वाणी मेरी है. आलाला..! मैं अच्छा भाषण कर सकता हूं, मैं जोरदार भाषण कर सकता हूं. मूढ़ है. ये जड़ है. यह भाषा निकलती है वह जड़की है. आलाला..!

‘शरीराश्रित उपदेश-उपवासादि क्रियाओंमें अपनत्व मानता है. ...तथा पर्यायमें ज्व-पुद्गलके परस्पर निमित्तसे अनेक क्रियाओं होती हैं,...’ क्या कहते हैं? ओलना, आदि शरीरकी क्रिया जो होती है वह स्वतंत्र जड़की, उसमें आत्माका रागका निमित्त ऐसा ज्ञानकर निमित्त मात्र है. तो ऐसा न मानकर मैं ओलता हूं, मैं चलता हूं, मैं शरीरका सब उपयोग करता हूं, लक्ष्मीका सदुपयोग करता नहीं? .. शरीरका सदुपयोग किया. क्या (किया)? वह तो जड़ है. उसमें क्या कर सकते हैं? लक्ष्मीका सदुपयोग (किया). लक्ष्मी तो जड़ है, अज्व है. उसका सदुपयोग कर सकता है आत्मा? दान देना वह सदुपयोग है. भोगमें लेना वह असदुपयोग है. वह बात ही जूठी है. आलाला..! समझ में आया?

सर्वज्ञ वीतराग परमेश्वर त्रिलोकनाथ तीर्थकरदेवका यह आदेश है कि तेरी तुझे जबर नहीं है, लैया! आलाला..! तुं कहां अपना मानते हो और अपना क्या है (उसे) तुम दृष्टिमें से छोड़ देता है, तुझे मालूम नहीं. आलाला..! ‘उपवासादि क्रिया...’ देओ! उपवासकी क्रिया, रसत्यागकी क्रिया. रस तो जड़ है. आनेवाला नहीं था तो मैंने छोड़ दिया रस जानेका. वह भी जड़की क्रियाका अभिमान किया. आलाला..! समझ में आया? सूक्ष्म बात है, भगवान! उसे अनादिकावसे बड़ी लूल हो गयी है. वह लूल निकालनेकी उसको जबर भी नहीं है और लूल निकले तो कैसा होता है उसकी जबर नहीं. आलाला..! धर्मकी क्रिया करे सुबल सामायिक करे, प्रौषध करे, पडिकमणा करे. वह तो जड़की क्रिया है, वह कहां आत्माकी है? उसमें राग मंद हो तो वह विकारकी क्रिया है. समझ में आया? वह कोई आत्माकी क्रिया नहीं. आलाला..!

‘उपासादि क्रियाओंमें अपनत्व मानता है. पोतापणुं माने छे... तथा पर्यायमें ज्व-पुद्गलके परस्पर निमित्तसे अनेक क्रियाओं होती हैं, उन्हें दोनों द्रव्योंके मिलापसे उत्पन्न हुई मानता है;...’ मैं आत्मा और शरीरकी क्रिया दोनों मिलाकर हुआ है. शरीर जैसे चलता है और मैं आत्मा उसका राग करता हूं, तो दो मिलाकर शरीरकी क्रिया हुई.

मूढ है. शरीरकी क्रियामें तेरा अधिकार कहां है? समझमें आया? और तेरी ज्ञानकी क्रियामें परका अधिकार कहां है? ज्ञाननेकी पर्यायमें शरीर था, इंद्रिय है तो मुझे ज्ञान होता है. वल मूढ है. परद्रव्यसे ज्ञान होता है? ज्ञान तो अपनी पर्याय है. समझमें आया? निमित्तको उडा देते हैं यहां. आयेगा.

‘पर्यायमें ज्व-पुद्गलके परस्पर निमित्तसे अनेक क्रियाओं होती हैं, उन्हें दोनों द्रव्योंके भिवापसे उत्पन्न दुर्घ मानता है;...’ यल ज्वकी क्रिया है. ज्ञानना... ज्ञानना.. ज्ञानना... ज्ञानना... ज्ञानना.. वल ज्वकी क्रिया है. उसमें पुद्गल निमित्त है. फिर ली वाणी आदि पुद्गलकी जडकी क्रिया है, उसमें ज्व निमित्त है. ‘ऐसा भिन्न भिन्न भाव भासित नहीं होता...’ निमित्तका अर्थ-है, अस ईतना. लेकिन मेरेसे यल दुआ और उससे मेरेमें दुआ (वल अज्ञान है). आलाला..!

‘जिसकी मति अज्ञानसे मोहित है...’ अपना शुद्ध चैतन्य स्वरूप आत्मज्ञानके लान बिना मति जसकी मोहित है. ‘और जो मोह, राग, द्वेष आदि बहुत भावोंसे सहित है, वल ज्व ऐसा कहता है (मानता है) कि ये शरीरादि बद्ध...’ समीप है न शरीर, वाणी समीप है. ‘और धनादि अबद्ध...’ लक्ष्मी, धान्य समीप नहीं है. भिन्न है, दूसरे है. आलाला..! ‘पुद्गलद्रव्य मेरे हैं.’ ऐसा मानता है. यल तो पुद्गल मिट्टी है, शरीर मिट्टी है, वाणी मिट्टी है, मन अंदर है. आत्मा विकार करता है तो जड मन है रजकण्डका. उससे मुझे ज्ञान दुआ. जैसे बद्ध और अबद्ध मेरी चीज है. लो, यल धन-धान्य आदि. आदि शब्दसे स्त्री, कुटुंब, परिवार, लडका, लडकियां ये मेरे हैं. ओलोलो..! ये लडका कुछ ठीक है मेरा नहीं हैं. लेकिन अंदरमें तो गुद्गुदी होती है कि यल मेरा है. समझमें आया? आलाला..!

बद्ध और अबद्ध चीज धान्य-अनाज, शक्कर, गुड, पकवान, कपड़ें, ऊवाहरात मेरी चीज है. यल कोट किसका है? मेरा है. श्रीमद्को ऐसा पूछते तब ऐसा कहते थे, यल कपडा किसका? अमारा. अमारा अर्थात्? अ-अर्थात् मेरा नहीं. समझ में आया? अ-मारा छे. अ-मारा भाषा ऐसी है कि हमारा है ऐसा मानते हैं. हमारा (अ-मारा) है. यल मेरा नहीं है ऐसा उसका अर्थ है. आलाला..! ‘धनादि अबद्ध पुद्गलद्रव्य मेरे हैं.’ ऐसा मानते हैं.

‘शरीरादि बाह्य पदार्थोंमें अकताबुद्धि करनेसे...’ शरीर, वाणी, धन, धान्य, लक्ष्मी, आबड़, कीर्ति, उसमें अकताबुद्धि करनेसे ‘अज्ञानीको भ्रम होता है कि...’ क्या? ‘रस, रूप, गंध, स्पर्श अने शब्दका जो ज्ञान होता है, वल इंद्रियोंसे होता है...’

जडा है, झीका है, मीठा है, तीजा है, औसा जो ज्ञान होता है न, तो वह औसा मानता है कि वह इन्द्रियोंसे ज्ञान होता है. ये तो जड इन्द्रिय है. वह ज्ञान इन्द्रियसे होता है? अपनी पर्यायमें होता है. आलाला..! सूक्ष्म बात (है). अक तत्वमें दूसरे तत्वका मिलाप कर देते हैं. वह मिथ्यात्वभाव, मिथ्या दृष्टि, मिथ्यादर्शनको सेवनेवाला है. आलाला..!

‘अज्ञानीको भ्रम होता है कि,...’ जबमें रसका ज्ञान होता है न? जडा है, मीठा है. वह ज्ञानता है कि इन्द्रिय द्वारा मुझे ज्ञान हुआ. इन्द्रिय तो जड है. ज्ञान हुआ वह तो तेरी पर्यायमें हुआ है. वह रससे ज्ञान हुआ है, इन्द्रियसे हुआ है औसा है नहीं. आलाला..! भारी! भ्रमणा भारी, भाई! साधु नाम धरावे, रस जाना छोडे तो भी औसा माने कि वह रस जाता हूं तो रससे ज्ञान मुझे हुआ. मूढ है. साधु नहीं, वह तो मिथ्यादृष्टि है. आलाला..! स्वप्नके साधनकी तो उसको जबर नहीं. मैं आनंदकंद सख्यिदानंद प्रभु हूं. मैं पर श्रीजको परंपसे ज्ञाननेवाला हूं, अपनेको अपनेइप ज्ञाननेवाला हूं, औसा छोडकर साधु नाम धारण करके भी औसा मानते हैं कि ये रसका ज्ञान मुझे इन्द्रियसे हुआ. रसका ज्ञान मुझे इन्द्रियसे हुआ, स्पर्शका ज्ञान मुझे इन्द्रियसे हुआ, गंधका ज्ञान मुझे इन्द्रियसे हुआ. मूढ है. आलाला..! मूर्ख है. बहुत परीक्षा करने जाये तो मूर्खका समूह बहुत नीकले.

यहां तो बात यह है, भगवान! सुन तो सही. तुम ज्ञानस्वप्न हो, चैतन्य स्वभाव हो. तो चैतन्य स्वभाव में जो परका ज्ञान होता है वह अपनेसे होता है. परसे नहीं. समज में आया? इन्द्रियसे विषयभोग करता है तो स्पर्श जो है, ठंडा मुलायम, तो मुलायम कहते हैं न? ज्ञान होता है मुलायमका ज्ञान. औसा हुआ तो, ये मुलायम है तो उससे मुझे ज्ञान हुआ. मुलायम तो जड है. अजवसे ज्ञान होता है आत्मामें? कुछ मालूम नहीं. अनादिसे भ्रम में पडा है. आलाला..! धर्मिक नाम पर भी मैं परकी दया पाव सकता हूं, परकी हिंसा कर सकता हूं, वह तो भ्रम है. आलाला..! पर तत्वकी अवस्था मैं कर सकता हूं, परतत्व-परका जवन रहा तो उसको मैंने जवित रजा, समज में आया? और मैंने उसको मार डाला. किसको मारे? भाई! सुन तो सही. उसकी अवस्था शरीरसे भिन्न हो वह तो उसके कारणसे होती है? तेरे कारणसे होती है? भारी काम, भाई! कलो, सुज्ञानमलज! आलाला..!

मुमुक्षु :- ये मान्यता कब छूटे?

उत्तर :- माना तो है जिवटा अनादिसे. वह मान्यता छोडे तो छूटे. अपने आप छूटे औसा नहीं. अपने उदाहरण नहीं देते? वृक्षको आलिंगन करके (मानता है कि) मुझे वृक्षने आलिंगन किया है. वृक्षने किया ? तुम छोड दो तो छूट जाये. औसे परवस्तुको अपनी

मानता है तो पकडा गया है. वह अपने कारणसे पकडा गया है. छोड दे उसको. मैं तो आत्मा ज्ञानस्वरूप आत्मा हूं. मैं परका करनेवाला नहीं, परका नाश करनेवाला नहीं, परकी रक्षा करनेवाला नहीं, और परसे मेरेमें ज्ञान होता है वह भी मैं नहीं. आलाहा..! समज में आया?

‘तथा घट-पटादिका ज्ञे ज्ञान होता है, वह बाह्य पदार्थोंसे होता है,...’ जैसा मानता है. कपडा देभता है न कपडा? यह रेखी कपडा है. तो वह रेखी कपडासे रेखी कपडाका ज्ञान हुआ. मूढ है. वह तो पर चीज है. उससे यहां ज्ञान होता है? जिसमें ज्ञान है उसमें ज्ञान होता है, उसके कारणसे ज्ञान होता है. कपडेमें ज्ञान है? ‘घट-पटादि...’ पट अर्थात् वस्त्र. घडेका ज्ञान होता वह बाह्य पदार्थोंसे होता है. उस पदार्थकी उपाती है तो मुझे उस ओरका ज्ञान हुआ. जूठ है. ज्ञान तो अपनी पर्याय है. अपनेमें होता है, अपने कारणसे होता है. ईन्द्रियसे होता है जैसा मानना मूढ है. आलाहा..! आंभ झूट जाय तो, न देभ सके, वो. आंभ बराबर है तो ज्ञान सकता है कि नहीं? ज्ञाननेका अस्तित्व तो तेरेमें है. उसके अस्तित्वसे तेरी ज्ञाननेकी पर्याय हुई? ये निमित्तसे हुई माननेवाले जैसे हैं जैसा कहते हैं. समज में आया?

‘किन्तु उसे ज्ञात नहीं है कि ज्वको ज्ञे ज्ञान होता है, वह अपनी ज्ञानगुणरूप उपादानशक्तिसे होता है. ईन्द्रियां और घट-पटादि पदार्थ तो जड हैं, उनसे ज्ञान नहीं होता; ज्ञान होनेमें वे तो निमित्तमात्र हैं.’ उपस्थिति है. लेकिन उससे ज्ञान होता नहीं. ये समय-समयकी भूल कैसे कर रहा है, वह बताते हैं. अक्षर पढते हैं तो ज्ञान होता है. अक्षरसे हुआ? अक्षरमें ज्ञान है? वह तो जड है. जिसमें ज्ञान है उससे ज्ञानसे ज्ञान होता है. पोपटभाई! बहुत सूक्ष्म जैसा. बहुत सूक्ष्म कब बैठे? नहीं बैठे तो रभडेगा चोर्यासीके अवतारमें. आलाहा..! ‘ईन्द्रियां और घट-पटादि पदार्थ तो जड हैं, उनसे ज्ञान नहीं होता; ज्ञान होनेमें वे तो निमित्तमात्र हैं.’

‘ईस प्रकार बहिरात्मा अपने ज्ञानात्मकस्वभावको भूलकर...’ मैं तो ज्ञाता-दृष्टा चैतन्यमूर्ति भगवान आत्मा हूं. आलाहा..! मैं किसीसे ज्ञाननेवाला नहीं, किसीको बतानेवाला नहीं. आलाहा..! मैं भाषा करनेवाला नहीं, मैं शरीर रचानेवाला नहीं, जानेकी क्रिया मुझसे होती नहीं. आलाहा..! ये तो जड है. पीनेकी क्रिया मुझसे होती नहीं वह तो जडकी क्रिया है. आलाहा..! कहते हैं, अपना ज्ञानस्वरूप मैं तो चिद्घन आत्मा, मैं प्रज्ञाब्रह्म स्वरूप हूं. ज्ञानस्वभाव मेरा है जैसा भूलकर, उसको छोडकर शरीरादिमें परपदार्थमें अपना अस्तित्व मानते हैं. अपना होनापना पर शरीरादिमें मानते हैं. ईन्द्रियोंसे ज्ञान हुआ तो .. ईन्द्रिय

में हूं. आलाला..! उससे ज्ञान हुआ, शरीरसे हुआ, अक्षरोंसे हुआ. तो उसका अर्थ वही थीज मैं हूं. ऐसी मान्यता, भ्रम अनादिसे सेवते हैं. त्यागी अनंत बार हुआ, साधु अनंत बार हुआ बाणो स्त्रियां छोडकर, लेकिन यह थीज उसको समझमें नहीं आयी. समझ में आया?

‘मुनिव्रत धार अनंत बैर त्रैवेयक उपज्यो, मुनिव्रत धार अनंत बैर...’ मुनिपना हुआ, नत्र द्विगंवर हुआ अनंत बार. ‘मुनिव्रत धार अनंत बैर त्रैवेयक...’ स्वर्गमें गया. ये ग्रीवा है न, ग्रीवा? उसके स्थानमें त्रैवेयक है वहां. लोक है वह पुरुषके आकारसे है. ये चौदह ब्रह्मांड पुरुषाकार है. ग्रीवाके स्थानमें वैमानिक देव है. उसमें मुनिव्रत विया, लज्जरो रानी राजपाट छोडकर ब्रह्मचर्य शरीरका पावा. वह किया परकी है. ‘पै निज आतम ज्ञान विना सुभ लेश न पायौ’ आत्माका ज्ञान बिना आनंद न आया उसको. वह पंच महाव्रतकी किया भी दृःभरूप है. बराबर है? लक्ष्मीयंदज्ज! पंच महाव्रत दृःभरूप! आस्रव है, दृःभ है. आलाला..! परकी दया पालनेका राग दृःभ है. आलाला..! ऐसी बात है. अने समझे नहि, कठिन पडे. लेकिन क्या करें? मार्ग तो ऐसा है, भाई! तुझे सत्य और असत्यकी विवेकता, भिन्नता भासित नहीं हुई. आलाला..! किया आदि की, महिने-महिने के उपवास अनंत बार किया. छ-छ महिनेका उपवास अनंत बार किया. उसमें क्या आया? वह तो रागकी मंदता है. रागकी मंदता तो पुण्यबंधका कारण है. वह कोई अबंधस्वरूप भगवान मोक्षका मार्ग नहीं है. आलाला..! बडी कठिन बात आयी.

तच्च प्रतिपद्यमानो मनुष्यादिचतुर्गतिसम्बन्धिशरीराभेदेन प्रतिपद्यते तत्र-
 *नरदेहस्थमात्मानमविद्वान् मन्यते नरम्।
 तिर्यचं तिर्यगङ्गस्थं सुराङ्गस्थं सुरं तथा॥८॥
 नारकं नारकाङ्गस्थं न स्वयं तत्त्वतस्तथा।
 अनंतानंतधीशक्तिः स्वयंवेद्योऽचलस्थितः॥९॥

- * सुरं त्रिदशपर्यायैस्तथानरम्।
 तिर्यञ्च च तदङ्गे स्वं नारकाङ्गे च नारकम्॥३२-३३॥
 वेत्त्यविद्यापरिश्रान्तो मूढस्तत्र पुनस्तथा।
 किन्त्वमूर्तं स्वसंवेद्यं तद्रूपं परिकीर्तितम्॥-३४॥

- ज्ञानार्णवे-शुभचन्द्राचार्यः

‘શરીરાદિ પર પદાર્થોસે અપના અસ્તિત્વ માનતા હૈ,...’ અપના સ્વભાવ ભૂલકર શરીરાદિ પર પદાર્થોસે અપના અસ્તિત્વ માનતા હૈ. ‘અર્થાત્ વહ શરીરાદિ પદાર્થોમ્ હી આત્મબુદ્ધિ કરતા હૈ.’ આત્મબુદ્ધિ (અર્થાત્) મ્મં હૂં.. મ્મં હૂં. ઉસસે મુજે જ્ઞાન હોતા હૈ, ઉસસે મુજે શાંતિ હોતી હૈ, ઉસસે મુજે સુખ હોતા હૈ. આહાહા..! ઐસા અજ્ઞાની પર પદાર્થમ્ આત્મબુદ્ધિ માનકર અપના સ્વભાવકો ખો બૈઠતા હૈ. બડી કઠિન બાતે.

ટીકા :- નરસ્ય દેહો નરદેહઃ તત્ર તિષ્ઠતીતિ નરદેહસ્થસ્તમાત્માનં નરં મન્યતે। કોઽસૌ? અવિદ્વાન્ બહિરાત્મા। તિર્યચમાત્માનં મન્યતે। કથંભૂતં? તિર્યગ્જ્ઞસ્થં તિરશ્ચામઙ્ગં તિર્યગ્ઙ્ગં તત્ર તિષ્ઠતીતિ તિયગ્ઙ્ઞસ્થસ્તં। સુરાઙ્ગસ્થં આત્માનંત સુરં તથા મન્યતે।।૮।। નારકમાત્માનં મન્યતે। કિં વિશિષ્ટં? નારકાઙ્ગસ્થં। ન સ્વયં તથા નરાદિરૂપ આત્મા સ્વયં કર્મોપાધિમંતરેણ ન ભવતિ। કથં? તત્ત્વતઃ પરમાર્થતો ન ભવતિ। વ્યવહારેણ તુ યદા ભવતિ તદા ભવતુ। કર્મોપાધિકૃતા હિ જીવસ્ય મનુષ્યાદિપર્યાયાસ્તન્નિવૃતૌ નિવર્તમાનત્વાત્ ન પુનઃ વાસ્તવા ઇત્યર્થઃ। પરમાર્થતસ્તર્હિકીદ્વશોઽસાવિત્યાહઅનંતાનન્તધીશક્તિઃ ધીશ્ચ શક્તિશ્ચ ધીશક્તિ અનંતાનન્તે ધીશક્તિ યસ્ય। તથાભૂતોઽભિધીયતે। કર્માદ્યપાયે ચાનન્તાનન્તધીશક્તિપરિણત આત્મા સ્વસંવેદનેનૈવ વેદ્યઃ। તદ્વિપરીતપરિણત્યનુભવસ્ય સંસારાવસ્થાયાં કર્મોપાધિનિર્મિત્ત- ત્વાત્। અસ્તુ નામ તથા સ્વસંવેદ્યઃ કિયત્કાલમસૌ ન તુ સર્વદા। પશ્ચાત્ તદ્રૂપવિનાશાદિત્યાહ- અચલસ્થિતિઃ અનંતાનંતધીશક્તિસ્વભાવેનાચલાસ્થિતિર્યસ્ય સઃ। ચૈઃ પુનર્યોગસાંખ્યેર્મુક્તૌ તત્પ્રચ્યુતિરાત્મનોઽભ્યુપગતા તે પ્રમેયકમલમાર્તઙ્ડે ન્યાયકુમુદચન્દ્રે ચ મોક્ષવિચારે વિસ્તરતઃ પ્રત્યાખ્યાતાઃ।।૯।।

અને તેનું પ્રતિપાદન કરી મનુષ્યાદિ ચતુર્ગતિ સંબંધી શરીરભેદથી જીવભેદનું તેમાં પ્રતિપાદન કરે છે.

શ્લોક - ૮-૯

અન્વયાર્થ :- (અવિદ્વાન) મૂઢ બહિરાત્મા (નરદેહસ્થં) મનુષ્યદેહમાં રહેલા (આત્માનં) આત્માને (નરમ) મનુષ્ય, (તિર્યગ્જ્ઞસ્થં) તિર્યચના શરીરમાં રહેલા આત્માને (તિર્યચમ્) તિર્યચ, (સુરાંઙ્ગસ્થં) દેવના શરીરમાં રહેલા આત્માને (સુરં) દેવ (તથા) અને...

અન્વયાર્થ :- (નારકાંઙ્ગસ્થં) નારકીના શરીરમાં રહેલા આત્માને (નારકં) નારકી (મન્યતે) માને છે. (તત્ત્વતઃ) વાસ્તવિક રીતે (સ્વયં) સ્વયં આત્મા (તથા ન) તેવો

નથી-અર્થાત્ તે મનુષ્ય, તિર્યચ, દેવ અને નારકીરૂપ નથી; પરંતુ વાસ્તવિક રીતે આ આત્મા (અનંતાનંતધીશક્તિ) અનંતાનંત જ્ઞાન અને અનંતાનંત શક્તિ (વીર્ય) રૂપ છે, (સ્વસંવેદ્યઃ) સ્વાનુભવગમ્ય છે-પોતાના અનુભવગોચર છે અને (અચલસ્થિતિઃ) પોતાના સ્વરૂપમાં સદા નિશ્ચલ-સ્થિર રહેવાવાળો છે...

ટીકા :- નરનો દેહ તે નરદેહ. તેમાં રહે છે તેથી નરદેહસ્થ. તે (નરના દેહમાં રહેનાર) આત્માને નર માને છે. કોણ તે (આવું માને છે)? અવિદ્વાન-બહિરાત (એવું માને છે); તિર્યચને આત્મા માને છે, કેવા (તિર્યચ)ને? તિર્યચોના શરીરમાં રહેનારને-તિર્યચોનું શરીર તે તિર્યચશરીર-તેમાં રહે છે તેથી તિર્યચસ્થ-તેને (આત્મા માને છે). તેવી રીતે દેવોના શરીરમાં રહેનાર (આત્મા) ને દેવ માને છે.

નારકને આત્મા માને છે. કેવા (નારકને)? નારકીના શરીરમાં રહેનારને. આત્મા સ્વયં નરાદિરૂપ નથી; કર્મોપાધિ વિના તે સ્વયં થતો નથી. કેવી રીતે? તત્ત્વતઃ એટલે પરમાર્થ તે (તેવો) નથી, પણ વ્યવહારે તે હોય તો ભલે હોય. જીવની મનુષ્યાદિ પર્યાયો કર્મોપાધિથી થયેલી છે. તે (કર્મોપાધિ) નિવૃત્ત થતાં (મટતાં) તે (પર્યાય) નિવૃત્ત થતી હોવાથી વાસ્તવમાં (તે પર્યાયો જીવની) નથી-એમ અર્થ છે.

ત્યારે પરમાર્થ તે (આત્મા) કેવો છે? તે કહે છે. તે અનંતાનંત ધીશક્તિ-અર્થાત્ અનંતાનંત જ્ઞાન અને શક્તિ-વાળો છે. તેવો તે કેવી રીતે જાણી શકાય (અનુભવી શકાય)? તે કહે છે. તે સ્વસંવેદ્ય છે. નિરુપાધિક રૂપ જ વસ્તુનો સ્વભાવ કહેવાય છે. કર્માદિનો વિનાશ થતાં, અનંતાનંત જ્ઞાન-શક્તિરૂપે પરિણત આત્મા સ્વસંવેદનથી જ વેદી શકાય છે. સંસાર-અવસ્થામાં તે કર્મોપાધિથી નિર્મિત (નિર્મયિલો) હોવાથી તેનાથી વિપરીત પરિણાથિનો અનુભવ થાય છે.

તેવો સ્વસંવેદ્ય (આત્મા) ભલે હો, પણ તે કેટલો કાલ? સર્વદા તો નહિ હોય, કારણ કે પાછળથી તેના રૂપનો નાશ થાય છે. (આવી શંકાનો પરિહાર કરતાં) કહે છે કે-તેની (આત્માની) અચળ સ્થિતિ છે, કારણ કે અનંતાનંત ધીશક્તિના સ્વભાવના કારણે તે અચલ સ્થિતિવાળો છે. જે યોગ અને સાંખ્યમતવાળાઓએ, મુક્તિના વિષયમાં આત્માની તેનાથી (મુક્તિથી) પ્રચ્યુતિનો (પતનનો) સંભવ માન્યો છે, તેમના સંબંધી (ખંડનરૂપે) પ્રમેયકમલમાર્તણ્ડ અને ન્યાયકુમુદ્યન્દ્રમાં મોક્ષવિચાર-પ્રસંગે વિસ્તારથી કહેવામાં આવ્યું છે.

ભાવાર્થ :- નરનારકાદિ જે પર્યાયોને જીવ ધારણ કરે છે તે પર્યાયોરૂપ અજ્ઞાની પોતાને માને છે. વાસ્તવમાં જીવ તે પર્યાયોરૂપ નથી, પણ તે સ્વાનુભવગમ્ય, શાશ્વત અને અનંતાનંત-જ્ઞાન-વીર્યમય છે. મુક્ત-અવસ્થામાં (મોક્ષમાં) તેની સ્થિતિ અચલ છે;

ત્યાંથી (મુક્તિથી) તેનું કદી પણ પતન થતું નથી-અર્થાત્ જીવ મુક્ત થયા પછી કદી ફરીથી સંસારમાં આવતો નથી. યોગ અને સાંખ્યમતવાળાની માન્યતા તેનાથી વિપરીત છે.

વિશેષ

બહિરાત્મા નરનારકાદિ પર્યાયોને જ પોતાની સાચી અવસ્થા માને છે. આત્માનું વાસ્તવિક સ્વરૂપ તેનાથી ભિન્ન કર્મોપાધિરહિત, શુદ્ધ, ચૈતન્યમય, ટંકોટકીર્ણ એક જ્ઞાતા-દૃષ્ટા છે, અભેદ છે, અનંતજ્ઞાન તથા અનંતવીર્યથી યુક્ત છે અને અચલ સ્થિતિરૂપ છે-આવું ભેદજ્ઞાન (વિવેકજ્ઞાન) તેને હોતું નથી, તેથી તે સંસારના પર પદાર્થોમાં તથા મનુષ્યાદિ પર્યાયોમાં આત્મબુદ્ધિ કરે છે-તેને આત્મા માને છે.

જીવ જે જે ગતિમાં જાય છે તે તે ગતિને અનુરૂપ જુદો જુદો સ્વાંગ (વેષ) ધારણ કરે છે. આ સ્વાંગ અચેતન છે, જડ છે અને ક્ષણિક છે. તે વેષને ધારણ કરનાર જીવ, તેનાથી ભિન્ન, શાશ્વત, જ્ઞાનસ્વરૂપ ચેતન દ્રવ્ય છે. અજ્ઞાનીને પોતાના વાસ્તવિક સ્વરૂપનું ભાન નથી, તેથી તે બાહ્ય વેષને જ જીવ માની તે પ્રમાણે વર્તાવ કરે છે.

“...અમૂર્તિક પ્રદેશોનો પુંજ પ્રસિદ્ધ જ્ઞાનાદિ ગુણોનો ધારક અનાદિનિઘન વસ્તુ પોતે (આત્મા) છે, તથા મૂર્તિક પુદ્ગલ દ્રવ્યોનો પિંડ પ્રસિદ્ધ જ્ઞાનાદિરહિત નવીન જ જેનો સંયોગ થયો છે એવાં શરીરાદિ પુદ્ગલ કે જે પોતાનાથી પર છે-એ બન્નેના સંયોગરૂપ નાના પ્રકારના મનુષ્ય-તિર્યચાદિ પર્યાયો હોય છે તે પર્યાયોમાં આ મૂઢ જીવ અહંબુદ્ધિ ધારી રહ્યો છે, સ્વ-પરનો ભેદ કરી શકતો નથી. જે પર્યાય પામ્યો હોય તેને જ પોતાપણે માને છે; તથા એ પર્યાયમાં પણ જે જ્ઞાનાદિ ગુણો છે તે તો પોતાના ગુણ છે અને રાગાદિક છે તે પોતાને કર્મનિમિત્તથી ઔપાધિક ભાવ છે; વળી વર્ણાદિક છે તે પોતાના ગુણો નથી પણ શરીરાદિ પુદ્ગલના ગુણો છે; શરીરાદિમાં પણ વર્માદિનું વા પરમાણુઓનું પલટાવું નાના પ્રકારરૂપ થયા કરે છે. એ સર્વ પુદ્ગલની અવસ્થાઓ છે, પરંતુ તે સર્વને આ જીવ પોતાનું સ્વરૂપ જાણે છે. તેને સ્વભાવ-પરભાવનો વિવેક થઈ શકતો નથી.”^૧ ૮-૯.

શ્લોક-૮-૯ ઉપર પ્રવચન

‘और उसका प्रतिपादन करके मनुष्यादि चतुर्गति संबंधी चार भेदसे जिवभेदका उसमें प्रतिपादन करते हैं.’ ૮-૯.

*नरदेहस्थमात्मानमविद्वान् मन्यते नरम्।
तिर्यचं तिर्यगङ्गस्थं सुराङ्गस्थं सुरं तथा॥८॥
नारकं नारकाङ्गस्थं न स्वयं तत्त्वतस्तथा।
अनंतानंतधीशक्तिः स्वयंवेद्योऽचलस्थितिः॥९॥

‘टीका :-’ टीका है न इस तरह? ‘नरका देह, वह नरदेह.’ यह देह ७५-मिट्टी. मनुष्यका देह-ये ७५. ‘उसमें रहता है, इस कारण नरदेहस्थ.’ देहमें रहने से नरदेहस्थ कलनेमें आता है. नरदेहस्थ-नरके देहमें रहनेवाला. ‘वह (नर के देह में रहनेवाला) आत्माको, नर मानता है.’ मैं मनुष्य हूँ. आलाहा..! ये मनुष्य (देह) ७५ मिट्टी है. आत्मा तो अड़पी भिन्न है उससे. जिसमें रहता है वह मैं हूँ किस गांवका है तू? राजकोटका. कौन-सा गांव है तुम्हारा? राजकोट. तेरा गांव होगा? आलाहा..! मैं मेरेमें हूँ, ऐसी जबर नहीं, इसलिये नरदेहमें रहने से मैं नरदेह हूँ. आलाहा..! ऐसे अज्ञानी मिथ्यादृष्टि धर्म के नाम पर भी मैं नरदेहस्थ-नरदेहसे .. किया करता हूँ. मैं शरीरका सदुपयोग करता हूँ. मैं नर हूँ, ऐसा माननेवाला मूढ़ जव है. समजमें आया? आलाहा..!

‘वह कौन (ऐसा मानता है?) अविद्वान्-’ पाठ ऐसा है न शब्दमें? अविद्वान्. वह मूर्ख है ऐसा कहते हैं. याहे तो आरह अंग पढा हो, नव पूर्वकी लब्धि हो, परंतु नरदेहस्थ-में नर हूँ, मैं देह हूँ और देहकी किया मैं करता हूँ, (वह) अविद्वान है. अविद्वान है. आलाहा..! भाषा वह है. ‘नरदेहस्थमात्मानमविद्वान् मन्यते नरम्’ आलाहा..! ‘वह कौन (ऐसा मानता है?) अविद्वान्-अहिरात्मा...’ जो देहमें रहनेकी चीज है तो मैं भिन्न हूँ. मैं देहमें रहा हूँ ऐसा भी नहीं. मैं तो मेरेमें हूँ (ऐसा मानता है). ऐसा न मानकर, नरदेहमें मैं रहा हूँ शरीर में (ऐसा मानता है). आलाहा..!

क्वश होता है न? काशीघाटका क्वश. लोटा. उसमें पानी है न? जैसे आकारसे पानी रहता है न? नीचेसे थोडा छोटा आकार होता है. पानीका आकार भी ऐसा होता है अंदर में. पानीका आकार क्वशके कारण नहीं. क्वशका आकार क्वशमें और पानीका आकार पानीमें है. इस प्रकार ये काशीघाटका क्वश-लोटा. लोटा-लोटा नहीं समजते? लोटा कहते हैं न? वैसे ये लोटा है न. ये काशीघाटका लोटा है. .. ऐसा लोटा है न? यह भी ऐसा लोटा है. काशीघाटका लोटा ऐसा कहते हैं हमारे यहां गुजरातीमें. जैसे उसमें पानी लोटा है ७५-७५. तो ७५का आकार ७५में है. लोटेमें नहीं. और लोटेका आकार लोटेमें है, ७५में

नहीं. जैसे वह शरीरका आकार है वह शरीरमें-जुड में है. आत्मा अंदर जो है वह अपना आकार भिन्न रखता है. आलाला..! पानी पानीमें है. पानी लोटेमें नहीं. आलाला..! समजमें आया? सूक्ष्म बात है, भगवान! जलमें जल है. जल लोटे में नहीं. लोटा तो जुड है, दूसरी चीज है. जैसे आत्मा आत्मामें है, शरीरमें नहीं. शरीर तो जुड भिड़ी है. लेकिन ऐसा विचार करनेका कहां समय है? कमाना, जाना, भोगना भरकर फिर जाना यौरासीमें भटकने. ऐसा विचार करनेके लिये समय कहां है? आलाला..! हिनतभाई! ऐसा कहते हैं. नहीं?

‘बहिरात्मा (ऐसा मानता है); तिर्यचको आत्मा मानता है,...’ तिर्यचका शरीर है न? लाथी-घोडा. उसमें आत्मा है तो मैं उसमें रहता हूँ तो मैं लाथी ही हूँ, मैं घोडा ही हूँ. आलाला..! लट, चिंटी, कौअमें उत्पन्न होता है न? अपनी चीज भिन्न है ऐसी ખબर नहीं. तिर्यचके शरीरमें रहनेवाला हूँ तो वही मैं हूँ. शरीर ही मैं हूँ. आलाला..! क्रीडा, कौआ, कूत्ता जैसे भव अनंत किये, अनंत किये. आलाला..! भूल गया. अनंत भव. अनादि कावका आत्मा तो है. कोई नया हुआ है? तो रहा कहां? अनंत भव (किये). समजमें आया? अनेक कमरे में जैसे अेक जलता दिया ले जाये, अनेक कमरे में दीपक तो दीपकमें है. कमरेमें नहीं. वह दीपक तो जैसे चलता है. समजमें आया? दीपक जुड है तो क्या माने? ये तो चैतन्य है न. जैसे शरीरके कमरे अनंत किये. उसमें से अेक देह में से दूसरे देह में. जहां-जहां रहा वहां वह मैं हूँ ऐसा माना. मैं चैतन्य दीपक तो अंदरमें परको स्पर्श किये बिना और परमें रहे बिना मैं तो अेक भवसे दूसरे भवमें गति करनेवाला चैतन्य हूँ. समज में आया? ऐसा न मानकर... आलाला..! तिर्यचके शरीर में आत्मा (गया तो) मैं तिर्यच हूँ.

अेक राजकी बात आती है. राजा को कहा किसी ऋषीमुनिने, तुम्हारी सात दिनमें मृत्यु है. हँ! कहां उपजूंगा? तेरी कृतिया है उसमें तू जन्म लेगा. गलुडियाको क्या कहते हैं तुम्हारेमें? पिछ्वा. आलाला..! देहकी स्थिति पूरी होनेका (समय) आ गया है. अभी तो तु निरोग हो. कुछ समयमें देह छूट जायगा. कहां जाऊंगा? कुत्ता. कैसा? कपालमें सकेट ... होता है न? ऐसा होगा. नौकरको हुकम किया कि, मैं जब जन्म लूँ तो मुझे मार डालना. मैं उसमें नहीं रह सकूंगा. वहां जन्म लिया. मारने जाये तो भागे. नहीं. आपने कहा था. लेकिन उसको कहां भान है. अभी तो कुछ भान है नहीं. इस प्रकार जहां-जहां देहमें गया, वहां-वहां अपनेको मानकर वहांसे छूटनेकी भावना की नहीं. ओहोहो..!

अनंत काण्ठी आथड्यो विना भान भगवान.
 सेव्या नहि गुरु संतने मूक्या नही अभिमान.
 आत्मसिद्धिमें आता है. श्रीमद्.

अनंत काण्ठी आथड्यो विना भान भगवान,
 सेव्या नहि गुरु संतने मूक्या नही अभिमान.
 हम जानते हैं, हमको भावूम है. जैसा-जैसा अभिमान करके योरासीके अवतारमें यवा
 गया.

यहां कहते हैं कि भगवान! तुम तिर्य्यमें गये तो तिर्य्यपना माना. 'तिर्य्योके शरीरमें रहनेवाले—तिर्य्यका शरीर, वह तिर्य्यशरीर—उसमें रहता है. इस कारण तिर्य्यस्थ—उसे (आत्मा मानता है). इसी प्रकार देवोंके शरीरमें रहनेवाले (आत्माको) देव मानता है.' बहुत पुण्यादिकी किया की हो तो देवमें जाता है. लेकिन वह गति है रभडनेकी. देव भी दुःभी है. आह्लाहा..! यहां पांच-पांच करोड, पच्चीस करोड, द्वा अजबवाले या ज्य्यादा लक्ष्मीवाले है, यहां बडा अंगवा क्या कहते है? भवन है. लेकिन है दुःभी बेचारे देव. समजमें आया? आह्लाहा..! 'देव मानता है.' देवके शरीरमें जाय तो देव माने. देव हूं, सुंदर हूं, वैक्यिक शरीर करनेवाला हूं. आह्लाहा..! मैं आत्मा ज्ञानस्वरूप हूं. वह देह नहीं. देव मैं नहीं, मैं मनुष्य भी नहीं, तिर्य्य भी नहीं जैसा न जाना.

'नारकको आत्मा मानता है.' नारकी नीचे है न? बहुत पाप किये हों, मांस जाया, दारु पिया, परस्त्रीका सेवन (किया). बहुत पाप करता है तो भरकर नरकमें जाते हैं. नीचे नरक है, हां! हंभक नहीं. नीचे नरकगति है. .. हजार योजन नीचे नारकी असंभ्य हैं. अनंत बार मांस, दारु का सेवन तो भरकर नरकमें गया. तो जैसा नरकके भव भी अनंत किये हैं. समज में आया? मनुष्यपनाका भव भी अनंत किया. इससे नारकीका भव अनंत किया. असंभ्यगुना अनंत. अनंत किया उससे. और उससे देवका भव असंभ्यगुना किया. अनंत असंभ्यगुना. ओहोहो..! यहां से भरकर आलु-अटाटा, शक्करकंद, कंदमूल, प्याज उसमें जव है. यहां गया तो अनंत भव किये. स्वगकि भवसे अनंत भव किये उसमें. आह्लाहा..! ये चार गतिका जोड, अनंतकाल में अभी तक रहा उसका. समजमें आया?

कहते हैं, नरकमें गया तो, मैं नारकी. आह्लाहा..! मुझे मारते हैं, पीटते हैं. यम होता है न यम? जेक रोगी था, जेक आदमी बहुत रोगी (था). उसकी सेवा करनेवाला बडा भाई था. तो अंडा, मांस वाकर जिलाता था. मांसको जिलानेवाला था वह भरकर नरकमें गया. और वह मांस जो जाता था, लेकिन वह जिलाता था, वह यहां यम हुआ. नारकीमें

यम. देवका लोता है न? यम लोता है. तो यम उसको मारता था. तो कलता है कि अरे..! मुझे? तेरे लिये मैंने पाप किया था. पाप किया, मैंने तेरे लिये किया था. मैं तो पापी हूँ. आलाला..! समज में आया? मारनेवाला उसको मारता था. आलाला..! अरेरे..! तूने मुझे पाप करवाया, जिलाया. आलाला..! जिसने जिलाया वह मरकर नरकमें गया. और जिसने जाया वह यम हुआ. यम उसको मारता है. दो भाई. अनंत बार हुआ, इसमें क्या बात है? अपनी चीजकी जबर नहीं और मिथ्यात्वभावसे सब भव किये. मिथ्यात्वभाव छोडना और अपने आत्माका भान करना. उसका...

(श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)

